फरीदाबाद-हरियाणा। मंत्री राम विलास शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हरीश बहन तथा ब्र.कु. प्रीति बहन।

कूचवेहर-प.बंगाल। 'स्वर्णिम भारत निर्माण' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सम्पा। साथ हैं भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय, भाजपा जिला सचिव मालती रवा तथा नेशनल एजुकेशनल सोसायटी की सदस्य मिनाती जी।

नालंदा-बिहार। ज्ञानचर्चा करने के पश्चात् डिस्ट्रिक्ट डी.एम. योगेन्द्र सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनुपमा।

सिलीगुड़ी-प.बंगाल। 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत अभियान' के अंतर्गत बस यात्रा का शुभारंभ करने के पश्चात् डी.आई.जी.बलदेव सिंह,सी.आर.पी.एफ. काइखली को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. सरिता।

बांसवाड़ा-उदयपुर(राज.)। पाँच लाख विशाल हनुमान चालीसा पाठ में लोगों को सच्चा हनुमान बनने का संदेश देते हुए ब्र.कु. रीटा। मंचासीन हैं ब्र.कु. सरोज, ब्र.कु. पूनम तथा नगरपालिका अध्यक्षा मंजूबाला पुरोहित।

फरीदाबाद-संजय एन्क्लेव। 'एक मुलाकात खुद के साथ' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

'होली' के रंग में रंग जायें

हर साल होली के त्योहार को मनाने के कई कारण हैं। ये रंग, स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ, एकता और प्रेम का भव्य उत्सव है। परंपरागत रूप से ये बुराई की सत्ता पर या बुराई पर अच्छाई की सफलता के रूप में मनाया जाता है। यह 'फगवा' के रूप में निमित्त किया गया है, क्योंकि यह हिन्दी महीने फाल्गुन में मनाया जाता है। होली शब्द 'होला' शब्द से उत्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ है नई और अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए भगवान की पूजा। होली के त्योहार पर होलिका दहन इंगित करता है कि जो भगवान के प्रिय लोग हैं, उन्हें पौराणिक चरित्र प्रहलाद की तरह बचा लिया जायेगा। जबकि जो भगवान के लोगों से तंग आ चुके हैं उन्हें एक दिन पौराणिक चरित्र होलिका की तरह दंडित किया जायेगा। होली का त्योहार मनाने के पीछे कई ऐतिहासिक महत्व और किवदन्तियां रही हैं। यह सबसे पुराने हिन्दु त्योहारों में से एक है। प्राचीन भारतीय मंदिरों की दीवारों पर होली उत्सव से सम्बंधित विभिन्न अवशेष पाये गये हैं।

होली के त्योहार में रंगों के माध्यम से प्रकृति के रंग में रंगकर सारी भिन्नतायें मिट जाती हैं। होली के दिन घर के आसपास की सूखी कंटीली लकड़ियों को इकट्ठा करके उसे जलाते हैं। होली में होलिका दहन का अपना ही महत्व है। कहा जाता है कि स्वयं को ही भगवान मान बैठे हिरण्यकश्यपु ने भगवान की भक्ति में लीन अपने ही पुत्र प्रहलाद को अपनी बहन होलिका के ज़रिये ज़िन्दा जला देने की योजना बनाई। होलिका को अग्नि के ताप से अप्रभावित होने का वरदान प्राप्त था। माना जाता है कि होलिका ने जब अपने भतीजे के साथ अग्नि में प्रवेश किया तो वह जल गई, जबकि प्रहलाद बच गया। इसके बाद से यह होलिका दहन मनाया जाता है। लोग शाम के वक्त अपने घर के बाहर लकड़ी इकट्ठा करते हैं और उसे जलाते हैं और अपनी बुराइयों के भस्म होने की प्रार्थना करते हैं। माना कि इन कंटीली लकड़ियों जैसी हमारे जीवन में व्याप्त बुराइयों को जलाने के पश्चात् सौहार्दपूर्ण व्यवहार रूपी गुणों के रंग से खेलना है।

होलिका दहन के अगले दिन रंगों से खेला जाता है। इसलिए इसे रंगावली होली और धुलेंडी भी कहा जाता है। सभी आपस में वैर वैमनस्य को भुलाकर रंग से होली खेलते हैं। होली अर्थात् 'हो-ली', माना जो हो गया, सो हो गया। अब हम सुमधुर रंगों के रंग में रंग जायें। इसका नाम है होली। अंग्रेजी में होली का अर्थ 'होली अर्थात् पवित्रता या शुद्धता' है। भीतर में किसी के भी प्रति अशुभ, अनर्थ व अयथार्थ भावों को मिटाकर अपने आप को शुद्ध बनाना है। इसीलिए होली के दिन भगवान को पूजते हैं। भगवान के साथ अपनी प्रीत जुटाने का आधार ही है शुद्धता। जहाँ शुद्धता है वहाँ प्रहलाद की तरह परमात्मा स्वयं ही सुरक्षा कवच बनकर उसकी रक्षा करते हैं। तो हम सब मिलकर आपस में एक शुभ और शुद्ध भावों रूपी रंग में रहकर प्रेम से व्यवहार करें। अपने मनोभावों को शुद्ध बनाकर होली का त्योहार मनायें। ये ही सही मायने में होली मनाना होगा।

आप सभी को 'होली' बनकर होली मनाने की हार्दिक शुभकामनायें...

कल्पना करना कोई बुरा नहीं, लिए उसमें कर्म का रंग भी भरें। रूप में पालन करें, तब आपकी रहेगी, अपितु आपको सफलता

कल्पना को 'कल्पना' ही न रहने दें

परंतु कल्पना को साकार करने के अपनी आत्मा के निर्देशों का यथार्थ कल्पना सिर्फ कल्पना ही नहीं के मीठे फल भी प्राप्त होंगे।

जिन्होंने भी महान बनने की ठानी, अपना लक्ष्य पाया, उन सबने पहले अपने आदर्शों का सपना ही देखा है। कोई भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने मन मंदिर में वो लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। स्पष्ट होने के बाद लक्ष्य प्राप्ति की दिशा उसी तरफ होनी चाहिए। साथ साथ अपने आदर्शों के प्रति अडिग होना चाहिए। इस तरह जिस व्यक्ति ने इच्छायें की, उनको साकार रूप दिया, वो सफल हुआ। जिसने अपनी वर्तमान स्थिति पर संतोष व्यक्त किया, कुछ इच्छा ही नहीं की, वो व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त होने के बराबर हो गया। क्योंकि जो इच्छायें ही नहीं करेगा, आगे बढ़ने का विचार ही मन में नहीं लायेगा, वो एक स्थान, एक अवस्था में 'जड़' ही हो जायेगा। सफलता पाने की पहली शर्त है मन में कुछ करने, कुछ प्राप्त करने का दृढ़ विश्वास। साथ साथ सदैव नई नई और आनंदमयी अभिलाषायें उत्पन्न कीजिये। यह सोचकर रोते मत रहिये कि ईश्वर ने आपके भाग्य में इतना ही लिखा है। ईश्वर कभी अन्याय नहीं करता। उसने सबके भाग्य में बराबर का सुख चैन लिखा है। उसने सबको हाथ पैर दिमाग दिया है। अब आवश्यकता है उसका उपयोग करने की। यहाँ पर आप निर्णय लीजिये कि आपको अपने जीवन में क्या बनना है। और खोज कीजिये जीवन को महान बनाने वाले सपनों की। केवल विचार करने और उसपर प्रयास करने के कारण ही आज मानव संसार भर के प्राणियों में श्रेष्ठ माना गया है। विचार और इच्छाओं ने ही सफलता का विकास किया है।

यदि आपको प्रेरणा लेनी है, आगे बढ़ना है, तो पहले प्रकृति की ओर देखिये। प्रकृति के प्रत्येक कार्य के लिये एक निश्चित नियम है, निश्चित समय है। यदि प्रकृति के नियमों में किसी प्रकार की अनियमितता आ जाये तो मनुष्य अकाल तथा सूखे की कगार पर पहुँच जाता है। दाने दाने के लिए मोहताज हो जाता है। यदि प्रकृति और आत्मा के निर्देशन पर हम चलें, तो पायेंगे कि हम सबकुछ प्राप्त कर सकते हैं। प्रकृति से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। प्रकृति हमारी सबसे बड़ी मार्गदर्शक है।

क्या आपके अंदर की बसी आत्मा आपकी पथप्रदर्शक या गुरू नहीं है! ये आपकी सच्ची साथी है, प्रत्येक संकट में। आपको उत्साह देने वाली है। यहाँ तक कि यदि आप अपने मार्ग से

- शेष पेज 7 पर...